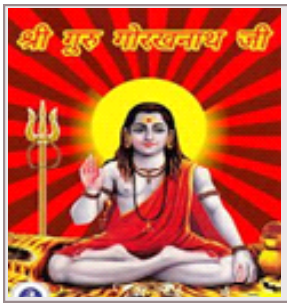

गुरु गोरखनाथ जी

राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

भारत की प्राचीन योग परंपरा मन-शरीर की एकाग्रता का अनमोल उपहार है।

राजपाल

सत्र : 2024-25

जून, 2025

हिन्दी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 06 जून 2025
आषाढ़ | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक
डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक
डॉ राजेंद्र प्रसाद
शमशेर सिंह

छात्र सम्पादक
किरण रानोलिया
रिनू
राहुल, प्रियंका
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय
हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522, 9785775350

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय
जयंती विशेष
देवकीनन्दन खत्री - एक परिचय

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
प्रशासनिक शब्दावली
योग की प्रासंगिकता
पुस्तक समीक्षा

संदेश

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के इस पावन अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। यह दिन न केवल शारीरिक, मानसिक और आत्मिक संतुलन की महत्ता को रेखांकित करता है, बल्कि यह भी स्मरण कराता है कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा आज भी संपूर्ण विश्व को दिशा दिखा रही है। योग केवल व्यायाम नहीं है, यह एक जीवनशैली है — एक अनुशासन है जो हमें भीतर से जोड़ता है। जब हम नियमित योगाभ्यास करते हैं, तो हम न केवल तनाव, चिंता और थकान से मुक्ति पाते हैं, बल्कि अपने भीतर की चेतना और सामर्थ्य से भी साक्षात्कार करते हैं। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तेज़ जीवन में योग हमारे लिए एक स्थायी साधन है, जो संतुलन, शांति और एकाग्रता प्रदान करता है। छात्र जीवन में यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल अध्ययन में सहायता करता है, बल्कि व्यक्तित्व विकास में भी सहायक होता है। आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि योग को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएँगे। न केवल आज के दिन, बल्कि हर दिन कुछ समय योग और ध्यान के लिए अवश्य निकालेंगे। आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य, आत्मिक उन्नति और शांतिपूर्ण जीवन की कामना करता हूँ।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

योग दिवस - स्वस्थ जीवन की ओर एक कदम

21 जून का दिन पूरी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत की प्राचीन विरासत योग आज वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य और सद्भाव का प्रतीक बन चुका है। यह दिवस न केवल शारीरिक व्यायाम का संदेश देता है, बल्कि मन, शरीर और आत्मा के संतुलन की ओर भी हमारा ध्यान आकर्षित करता है। आधुनिक जीवनशैली में तनाव, अनियमित दिनचर्या और मानसिक अशांति बढ़ती जा रही है। ऐसे में योग हमें प्रकृति से जुड़ने और आंतरिक शांति पाने का मार्ग दिखाता है। आसन, प्राणायाम और ध्यान के माध्यम से हम न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं, बल्कि अपनी एकाग्रता और उत्पादकता को भी बढ़ा सकते हैं। इस वर्ष हमारे कॉलेज ने भी योग दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें छात्र-छात्राओं और शिक्षकों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। यह देखकर प्रसन्नता हुई कि हमारी युवा पीढ़ी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक है। परंतु योग को केवल एक दिन की गतिविधि तक सीमित न रखें, बल्कि इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। आइए, हम सभी संकल्प लें कि योग को अपनाकर न केवल अपने जीवन को बेहतर बनाएंगे, बल्कि समाज को भी स्वस्थ और सकारात्मक बनाने में योगदान देंगे। जैसा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है - "योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक उपहार है। यह मन और शरीर की एकता का प्रतीक है।"

संपादक

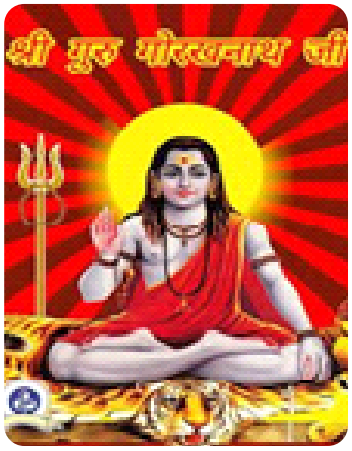

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

मत्स्येंद्र नाथ द्वारा रचित पुस्तकों में से सबसे अधिक प्रामाणिक पुस्तक 'कौल ज्ञान निर्णय' है। उनकी विचारधारा का पता इसी पुस्तक से चलता है। गोरखबानी का अध्ययन करने से पता चलता है कि गोरखनाथ को उन्होने समय-समय पर सम्बोधन तथा उनकों समाधानात्मक उत्तर दिये है। जिससे उनके विचार पता चलते है। मत्स्येंद्र नाथ कौल मार्ग के प्रवर्तक थे तथा उनका सम्प्रदाय "सिद्ध कौल सम्प्रदाय' था। कौल ज्ञान निर्णय वर्णन है। गोरखनाथ के गुरू मत्स्येंद्र नाथ का सम्बंध इसी योगिनी कौल मार्ग से बताया गया है।

काश्मीर के कौल मार्ग में मत्स्येंद्र नाथ को बड़ी श्रद्धा के साथ स्मरण किया जाता है। एक अन्य परम्परा के अनुसार मत्स्येंद्रनाथ ने चार सम्प्रदाय चलाये थे गोरखनाथी, मंगल या अरजनंगा (रावल) मीननाथ सिवतोर, पारसनाथ पूजा अन्तिम दोनों जैन है। नेपाल में प्रचलित एक बौद्ध कथा में मत्स्येंद्र नाथ को अवलोकितेश्वर भी समझा गया है।
मत्स्येंद्रनाथ पहले योग मार्ग के प्रवर्तक थे। परंतु संयोगवश एक ऐसे आचार में सम्मिलित हो गये थे जिसमें स्त्रियों के साथ अबाध संसर्ग मुख्य बात थी, संभवतः यह वामाचारी साधना थी। गुरू से ही जालंधरनाथ और कानिपा की साधना-पद्धति मत्स्येद्रनाथ और गोरखनाथ की साधना-पद्धिति से भिन्न थी। इस मत की पुष्टि 'गोरख' तथा अन्य नाथ साम्प्रदायिक कथाओं और अनुश्रुतियों में भी होती है। मत्स्येंद्रनाथ कौल मार्ग के प्रवर्तक हैं "कौल ज्ञान निर्णय" से स्पष्ट होता है कि "कौल मार्ग" अनादि काल से ही चला आ रहा है। मत्स्येंद्र नाथ ने इसे संशोधन करके इसे नया रूप प्रदान किया है।
भक्तियुक्ताः समत्वेन सर्व श्रृन्वंतु कौलिकम् ।46 ।। महाकौलात् सिद्धकौल सिद्धकौलात् मसादरम् । चतुर्युगविभागेन अवतारं चोदितं मया।। 47 || ज्ञानादौ निर्णितिः कौलं द्वितीये महत्संज्ञकम् ।
तृतीये सिद्धामृतं नाम कालौ मत्स्योंदरं प्रिये।।48।। ये चास्मिन्निर्गता देवि वर्णयिष्यामि तेऽखिलम् । एतस्माद् योगिनीकौलात् नाम्ना ज्ञानस्य निर्णितौ।।49।।'

इस श्लोक से यह जान पड़ता है कि आदि युग में जो कौलज्ञान था वही त्रेता में महत्कौल, द्वापर में सिद्धामृत और कलियुग में मत्स्योंदर कौल (मत्स्येंद्र कौल) नाम से प्रतिष्ठित हुआ। 'कौल ज्ञान निर्णय' में निम्नलिखित विषयों पर प्रकाश डाला गया है सृष्टि, प्रलय, मानस लिंग का मानसापचार से पूजन, निग्रह-अनुग्रह-कामण-हरण, प्रतिमाजल्पन, घट पाषाण-स्फोटन आदि सिद्धियों, भ्रान्तिनिरसन ज्ञान, जीवस्वरूप, जरामरण, पलित (केशों का पकना) का निवारण, अकुल से कुल की उत्पत्ति तथा कुल का पूजनादि गुरूपंक्ति, सिद्धपंक्ति, और योगिनी, पंक्ति, चकध्यान, अद्वैतचर्या, पात्रचर्या, न्यासविधि शीघ्र सिद्धि देने वाली, ध्यानमुद्रा, महाप्रलय के समय भैरव की आत्मरक्षा, भक्ष्यविधान, तथा कौल ज्ञान का अवतारण, आत्मवाद, सिद्धपूजन और कुलद्वीप, विज्ञान, देहस्थ चकस्थिता देवियों, कपाल भेद; कौल मार्ग का विस्तार, योगिनी संचार और देहस्थ सिद्धों की पूजा।
डॉ० बागची ने "कौलज्ञान निर्णय' की भूमिका में बताया गया है - कि बौद्ध सिद्धों और कौलज्ञान निर्णय, की कई बातों में समानता है 1. सहज पर जोर देना, 2. बाह्याचार का विरोध 3. पंचपवित्र आदि बौद्ध पारिभाषिक शब्द। 4. कुलक्षेत्र और पीठों की चर्चा, 5. वज्रीकरण का प्रयोग।
"कुलं शक्तिरितिप्रोक्तमकुलं शिव उच्यते। कुलैऽकुलस्य संबंधः कौलमित्यभिधीयते ।।

कौल लोगों के मतानुसार 'कुल' का अर्थ है शक्ति तथा 'अकुल' का अर्थ शिव है। कुल से अकुल की सम्बन्ध स्थापना ही 'कौल' मार्ग है।'

गुरु गोरखनाथ के पद

अवधू जाप जपौ जपमाली चीन्हौं, जाप जप्यां फल होई। अगम जाप जपीला गोरख, चीन्हत बिरला कोई ॥ टेक ॥ कंवल बदन काया करि कंचनं, चेतन करौ जपमाली। अनेक जनम ना पातिग छूटै, जपंत गोरख चवाली ॥एक अखीरी एकंकार जपीला, सुंनि अस्थूल दोइ बांणी। प्यंड ब्रह्मांड समि तुलि व्यापीले, एक अखिरी गुरमुखि जांणी ॥ द्वै अखिरी दोई पख उधारीला, निराकार जाप जपियां । जे जाप सकल सिष्टि उतपंनां. ते जाप गोरख कथियां ॥ त्रि अखिरी त्रिकोटी जपीला, ब्रह्मकुंड निज थानं।
अजपा जाप जपंता गोरख. अतीत अनुपम ग्यांनं ॥ चौ अखिरी चतर वेद थापिला, चारि खांणी चारि बांणी। मछिंद्र प्रसादें जती गोरख बोल्या, अजपा जपिला धीर रहांणी ॥

हे अवधू! ब्रह्म के नाम का जाप करके उसे पहचानो। जाप जपने से ही फल मिलता है। गोरख कहता है कि ब्रह्म का जाप करके भी कोई बिरला ही उसे जान पाता है। कमल (चक्र) को मुख और शरीर को मनके समझ कर जीव को जपमाला बना दो। गोरख कहता है (चवाली) कि इस प्रकार का जाप करने से अनेक जन्मों के पाप-संस्कार (पातिग) धुल जाते हैं। एक अक्षर वाले ॐकार का जाप करो। वाणी सूक्ष्मपाल और स्थूल दो प्रकार की है। दोनों वाणियों से परब्रह्म जो शरीर और ब्रह्माण्ड दोनों में समान रूप से व्याप्त है, उसका जाप करना एकाक्षरी मन्त्र जाप है। निराकार का जाप करने के साथ, प्राण और अपान दोनों का ऊर्धीकरण द्वि-अक्षरी जाप है। जाप के योग्य जिस ब्रह्म से सारी सृष्टि जन्मी, गोरख उसी के जाप की बात कह रहा है। त्रि-अक्षरी जाप त्रिकुटी में होता है। चन्द्र और सूर्य नाड़ियाँ सुषुम्ना में मिल जाती हैं, यही त्रि-अक्षरी जाप है। त्रिकुटी अर्थात् भ्रूचक्र में ब्रह्मकुण्ड का स्थान है।गोरख बता रहा है कि अजपा अर्थात् ब्रह्म का जाप करने से अतीत अर्थात् ब्रह्म का अद्वितीय ज्ञान अनुभव होता है। चार अक्षरी जाप में चार खांणी (स्वेदज/अस्थि, जरायुज/वीर्य, ॥ अण्डज/नेत्र व उद्भिद्/रोमावली) तथा चार बांणी (सहज/ शरीर, संयम/पवन, सुपाय व अतीत/परमपद) के विषय में ॥ ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। मच्छन्दर की कृपा से गोरख कहता है कि धैर्य रखने वाले योगी, अजपा (ब्रह्म) का जाप करें।
गोरख जी ने यहाँ मन्त्र जाप के सम्बन्ध में नाथ पंथी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। लोग कई-कई अक्षरों वाले मन्त्रों का जाप किया करते, परन्तु गोरख उन मन्त्रों को छोड़कर जाप का नया अर्थ प्रस्तुत करते हैं जो हठ योग साधना के अनुकूल है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि

ओ, मेरे ...ओम प्रकाश वाल्मीकि, 30 जून 1950 को मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश) के बरला गांव में जन्मे, एक प्रसिद्ध दलित साहित्यकार थे। उनकी आत्मकथा "जूठन" दलित साहित्य में एक महत्वपूर्ण रचना मानी जाती है, जिसमें उन्होंने दलितों के सामाजिक उत्पीड़न और संघर्षों को उजागर किया है। वाल्मीकि ने कई कविता संग्रह, कहानी संग्रह और आलोचनात्मक लेखन भी किया है, जिनमें "सदियों का संताप", "सलाम", और "दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र" शामिल हैं। 17 नवंबर 2013 को देहरादून में उनका निधन हो गया।

ओम प्रकाश वाल्मीकि का जीवन परिचय:

जन्म और शिक्षा:

ओम प्रकाश वाल्मीकि का जन्म 30 जून, 1950 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के बरला गांव में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव में हुई और फिर उन्होंने देहरादून से शिक्षा प्राप्त की।

दलित साहित्य में योगदान:

वाल्मीकि को हिंदी साहित्य में दलित साहित्य के एक प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में जाना जाता है।

"जूठन" उनकी आत्मकथा है, जो दलित साहित्य की एक महत्वपूर्ण रचना है।

प्रमुख रचनाएँ:

आत्मकथा: जूठन

कविता संग्रह: सदियों का संताप, बस! बहुत हो चुका

कहानी संग्रह: सलाम, घुसपैठिए

अन्य: दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र

सम्मान:

वाल्मीकि को 1993 में डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार और 1995 में परिवेश सम्मान से सम्मानित किया गया था।

निधन:

17 नवंबर, 2013 को देहरादून में उनका निधन हो गया।

जयशंकर प्रसाद

हिन्दी कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार तथा निबन्ध-लेखक थे। वे हिन्दी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। उन्होंने हिन्दी काव्य में एक तरह से छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ीबोली के काव्य में न केवल कामनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई, बल्कि जीवन के सूक्ष्म एवं व्यापक आयामों के चित्रण की शक्ति भी संचित हुई और कामायनी तक पहुँचकर वह काव्य प्रेरक शक्तिकाव्य के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गया। बाद के, प्रगतिशील एवं नयी कविता दोनों धाराओं के, प्रमुख आलोचकों ने उसकी इस शक्तिमत्ता को स्वीकृति दी। इसका एक अतिरिक्त प्रभाव यह भी हुआ कि 'खड़ीबोली' हिन्दी काव्य की निर्विवाद सिद्ध भाषा बन गयी।

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून, 1912 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के मीरापुर गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम दुर्गा प्रसाद था, और माता का नाम महादेवी था। विष्णु प्रभाकर को बचपन से ही पढ़ने और लिखने का शौक था, और उनकी मां ने उन्हें इस दिशा में प्रोत्साहित किया।

प्रारंभिक शिक्षा मीरापुर में प्राप्त करने के बाद, वे हिसार चले गए, जहाँ उन्होंने दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण, उन्होंने दसवीं के बाद सरकारी नौकरी शुरू कर दी, लेकिन नौकरी के साथ-साथ अपनी पढ़ाई भी जारी रखी। उन्होंने हिंदी में प्रभाकर और हिंदी भूषण की उपाधि प्राप्त की, साथ ही संस्कृत में प्रज्ञा और अंग्रेजी में बीए की डिग्री भी हासिल की। साहित्य के प्रति उनका प्रेम उन्हें हिसार में एक नाटक मंडली से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। उनकी पहली कहानी, "दिवाली की रात", 1931 में लाहौर से प्रकाशित एक समाचार पत्र "मिलाप" में प्रकाशित हुई थी। विष्णु प्रभाकर ने 76 वर्षों तक लेखन कार्य किया, और इस दौरान उन्होंने कई प्रसिद्ध रचनाएँ लिखीं। उनकी प्रमुख रचनाओं में "ढलती रात", "स्वप्नमयी", "अर्धनारीश्वर", "धरती अब भी घूम रही है", "आवारा मसीहा", "ज्योतिपुन्ज हिमालय", "जमुना गंगा के नैहर में", "हमसफर मिलते रहे" शामिल हैं। विष्णु प्रभाकर को साहित्य और समाज के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें "साहित्य अकादमी पुरस्कार", "शिखर सम्मान", "तुलसी पुरस्कार" और "सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार" शामिल हैं। 11 अप्रैल, 2009 को उनका दिल्ली में निधन हो गया।

नागार्जुन

नागार्जुन हिंदी और मैथिली साहित्य के एक प्रसिद्ध कवि और लेखक थे। उनका जन्म 30 जून 1911 को बिहार के मधुबनी जिले के सतलखा गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था, और उन्होंने "यात्री" उपनाम से भी लिखा। उन्हें जनकवि के रूप में भी जाना जाता था, और वे प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार थे।

संक्षिप्त जीवन परिचय:

जन्म: 30 जून 1911, सतलखा गाँव, मधुबनी, बिहार
वास्तविक नाम: वैद्यनाथ मिश्र
उपनाम: नागार्जुन, यात्री
भाषाएँ: हिंदी, मैथिली, संस्कृत, बांग्ला
विधाएँ: कविता, उपन्यास, कहानी, जीवनी, यात्रा वृत्तांत
पुरस्कार: साहित्य अकादमी पुरस्कार (मैथिली में "पत्रहीन नग्न गाछ" के लिए), भारत-भारती पुरस्कार, बिहार रत्न, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार
निधन: 5 नवंबर 1998

बालकृष्ण भट्ट (1844–1914)

हिंदी साहित्य के नवजागरण काल के एक प्रमुख साहित्यकार, पत्रकार और समाज-सुधारक थे। वे हिंदी गद्य लेखन के उन्नायक माने जाते हैं और उनकी रचनाएँ उस समय के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करती हैं। वे आधुनिक हिंदी गद्य को दिशा देने वाले अग्रणी लेखकों में से एक थे।

किरण रानोलिया

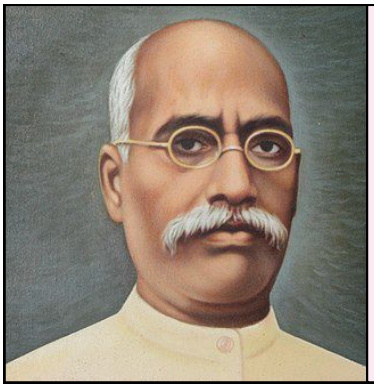

देवकीनन्दन खत्री
एक परिचय

देवकीनन्दन खत्री

देवकीनन्दन खत्री जी का जन्म 29 जून 1861 (आषाढ़ कृष्ण पक्ष सप्तमी संवत् 1918) शनिवार को पूसा, समस्तीपुर, बिहार में हुआ था। उनके पिता का नाम 'लाला ईश्वरदास' था। उनके पूर्वज पंजाब के निवासी थे और मुग़लों के राज्यकाल में ऊँचे पदों पर कार्य करते थे। महाराज रणजीत सिंह के पुत्र शेरसिंह के शासनकाल में लाला ईश्वरदास काशी आकर बस गये। देवकीनन्दन खत्री जी की प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू - फ़ारसी में हुई थी। बाद में उन्होंने हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेज़ी का भी अध्ययन किया। मुजफ्फरपुर देवकीनन्दन खत्री के नाना नानी का निवास स्थान था। आपके पिता 'लाला ईश्वरदास' अपनी युवावस्था में लाहौर से काशी आए थे और यहीं रहने लगे थे। देवकीनन्दन खत्री का विवाह मुजफ्फरपुर में हुआ था, और गया ज़िले के टिकारी राज्य में अच्छा व्यवसाय था। कुछ दिनों बाद उन्होंने महाराज बनारस से चकिया और नौगढ़ के जंगलों का ठेका ले लिया था। इस कारण से देवकीनंदन की युवावस्था अधिकतर उक्त जंगलों में ही बीती थी। इन्हीं जगंलों और उनके खंडहरों से देवकीनन्दन खत्री को प्रेरणा मिली, जिसने 'चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति', 'भूतनाथ' ऐसे ऐय्यारी और तिलस्मी उपन्यासों की रचना कराई, जिसने आपको हिन्दी साहित्य में अमर बना दिया। आपके सभी उपन्यासों का सारा रचना तंत्र बिलकुल मौलिक और स्वतंत्र है। इस तिलस्मी तत्व में आपने अपने चातुर्य और बुद्धि-कौशल से ऐय्यारी वाला वह तत्व भी मिला दिया था जो बहुत कुछ भारतीय ही है। यह परम प्रसिद्ध बात है कि 19वीं शताब्दी के अंत में लाखों पाठकों ने बहुत ही चाव और रुचि से आपके उपन्यास पढ़े और हज़ारों आदमियों ने केवल आपके उपन्यास पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी। यही कारण है कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यास लेखक श्री वृंदावनलाल वर्मा ने आपको हिन्दी का 'शिराज़ी' कहा है। आरंभिक शिक्षा समाप्त कर वह गया के 'टेकारी इस्टेट' पहुंच गये और वहां के राजा के यहां कार्य करने लगे। बाद में उन्होंने वाराणसी में एक प्रिंटिंस प्रेस की स्थापना की और 1883 में हिन्दी मासिक पत्र 'सुदर्शन' को प्रारम्भ किया। देवकीनन्दन खत्री जी के काशी नरेश 'ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह' से बहुत अच्छे सम्बंध थे। इस सम्बंध के आधार पर उन्होंने चकिया और नौगढ़ के जंगलों के ठेके ले लिये। देवकीनन्दन खत्री बचपन से ही घूमने के बहुत शौकीन थे।

कम्प्यूटर विषयक

1. Abundant – प्रचुर, बहुत अधिक
2. Ambiguous – अस्पष्ट, दो अर्थ वाला
3. Analyze – विश्लेषण करना
4. Anticipate – पूर्वानुमान लगाना
5. Articulate – स्पष्ट रूप से व्यक्त करना
6. Assert – दृढ़तापूर्वक कहना
7. Benevolent – दयालु, परोपकारी
8. Coherent – संगत, तार्किक
9. Comprehensive – व्यापक
10. Contradict – खंडन करना, विरोध करना
11. Convey – पहुँचाना, व्यक्त करना
12. Credible – विश्वसनीय
13. Depict – चित्रित करना, वर्णन करना
14. Determine – निर्धारित करना
15. Emphasize – जोर देना, महत्व देना
16. Evaluate – मूल्यांकन करना
17. Hypothesis – परिकल्पना
18. Inevitable – अपरिहार्य, अवश्यंभावी
19. Justify – उचित ठहराना
20. Significant – महत्वपूर्ण

इस ठेकेदारी के कार्य से उन्हें पर्याप्त आय होने के साथ साथ घूमने फिरने का शौक़ भी पूरा होता रहा। वह लगातार कई-कई दिनों तक चकिया एवं नौगढ़ के बीहड़ जंगलों, पहाड़ियों और प्राचीन ऐतिहासिक इमारतों के खंडहरों की खाक छानते रहते थे। बाद में जब उनसे जंगलों के ठेके वापिस ले लिए गये तब इन्हीं जंगलों, पहाड़ियों और प्राचीन ऐतिहासिक इमारतों के खंडहरों की पृष्ठभूमि में अपनी तिलिस्म तथा ऐय्यारी के कारनामों की कल्पनाओं को मिश्रित कर उन्होंने 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास की रचना की। बाबू देवकीनन्दन खत्री ने जब उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया, उस समय में अधिकतर हिन्दू लोग भी उर्दू भाषा ही जानते थे। इस प्रकार की परिस्थितियों में खत्री जी ने मुख्य लक्ष्य बनाया ऐसी रचना करना जिससे देवनागरी हिन्दी का प्रचार व प्रसार हो । यह इतना सरल कार्य नहीं था। किंतु उन्होंने ऐसा कर दिखाया । चन्द्रकान्ता उपन्यास इतना लोकप्रिय हुआ कि उस समय जो लोग हिन्दी लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे या केवल उर्दू भाषा ही जानते थे, उन्होंने केवल इस उपन्यास को पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी । इसी लोकप्रियता को ध्यान में रख कर उन्होंने इसी कथा को आगे बढ़ाते हुए दूसरा उपन्यास 'चन्द्रकान्ता सन्तति' लिखा जो 'चन्द्रकान्ता' की अपेक्षा अधिक रोचक था । इन उपन्यासों को पढ़ते समय पाठक खाना-पीना भी भूल जाते थे । इन उपन्यासों की भाषा इतनी सरल है कि पाँचवीं कक्षा के छात्र भी इन पुस्तकों को पढ़ लेते हैं । पहले दो उपन्यासों के 2000 पृष्ठ से अधिक होने पर भी, एक भी क्षण ऐसा नहीं आता जहाँ पाठक ऊब जाएँ ।

प्रमुख रचनाएँ

चन्द्रकान्ता (1888 - 1892): चन्द्रकान्ता उपन्यास को पढ़ने के लिये लाखों लोगों ने हिन्दी सीखी। यह उपन्यास चार भागों में विभक्त है। पहला प्रसिद्ध उपन्यास चंद्रकांता सन् 1888 ई. में काशी में प्रकाशित हुआ था। उसके चारो भागों के कुछ ही दिनों में कई संस्करण हो गए थे। चन्द्रकान्ता सन्तति (1894 - 1904): चन्द्रकान्ता की अभूतपूर्व सफलता से प्रेरित हो कर देवकीनन्दन खत्री ने चौबीस भागों वाले विशाल उपन्यास चंद्रकान्ता सन्तति की रचना की। उनका यह उपन्यास भी अत्यधिक लोकप्रिय हुआ। भूतनाथ (1907 - 1913) (अपूर्ण): चन्द्रकान्ता सन्तति के एक पात्र को नायक बना कर देवकीनन्दन खत्री जी ने इस उपन्यास की रचना की। किन्तु असामायिक मृत्यु के कारण वह इस उपन्यास के केवल छः भागों ही लिख पाये। आगे के शेष पन्द्रह भाग उनके पुत्र 'दुर्गाप्रसाद खत्री' ने लिख कर पूरे किये। 'भूतनाथ' भी कथावस्तु की अन्तिम कड़ी नहीं है। इसके बाद बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री लिखित 'रोहतास मठ' (दो खंडों में) आता है ।

हिन्दी साहित्य में स्थान

देवकीनन्दन खत्री की सभी कृतियों में मनोरंजन की जो इतनी अधिक कौतूहलवर्धक और रोचक सामग्री मिलती है उसका सारा श्रेय देवकीनन्दन खत्री के अनोखे और अप्रतिम बुद्धिबल का ही है। हिन्दी के औपन्यासिक क्षेत्र का आपने आरंभ ही नहीं किया था, उसमें उन्होंने बहुत ही उच्च, उज्ज्वल और बेजोड़ स्थान भी प्राप्त कर लिया था। भारतेंदु के उपरांत आप प्रथम और सर्वाधिक प्रकाशमान तारे के रूप में हिन्दी साहित्य में आए थे।

निधन

लगभग 52 वर्ष की अवस्था में ही काशी में 1 अगस्त, 1913 को परलोकवासी हो गए।

प्रियंका

1. Reena - 04-06-2003
2. Bhawana - 07-06-2002
3. Sunder Kumar - 08-06-2000
4. Anushka - 09-06-2000
5. Manisha - 26-06-2002
6. RENU - 03-06-2001
7. RAMESH KUMAR - 02-06-2000
8. Dimple - 23-06-2002
9. Raman Kumar - 21-06-2002
10. Naina - 11-06-2001

1. गोरखनाथ का समय- राहुल सांकृत्यायन के अनुसार - ८४५ ई० हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार - ९वीं शती आचार्य शुक्ल के अनुसार - १३वीं शती पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल के अनुसार - ११वीं शती रामकुमार वर्मा के अनुसार - १३वीं शती
2. गोरखनाथ का समय माना जाता है। - १३वीं शती
3. 'गोरखबानी' नाम से गोरखनाथ की रचनाओं का संपादन किसने किया ? - डॉ०
4. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल
5. नाथों की संख्या कितनी मानी जाती है? - ९
6. डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने गोरखनाथ द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या कितनी मानी है? -१४ (सबदी, पद, प्राण संकली, सिष्या दरसन, नरवैबोध, अभैमात्रा जोग, आसम-बोध, पंद्रह तिथि, सप्तवार, मछीन्द्र गोरखबोध, रोमावली, ग्यानतिलक, ग्यान चौतीसा, पंचमात्रा)
7. गोरखनाथ ने अपने मत का प्रचार कहाँ किया? -राजपूताने और पंजाब में
8. गोरखनाथ का समय पृथ्वीराज के आस-पास किसने माना है? -आचार्य शुक्ल नाथ परंपरा के अनुसार मत्स्येंदरनाथ के गुरु कौन थे? - जलधरनाथ
9. गोरखनाथ के गुरु थे? - मत्स्येन्द्रनाथ
10. 'बालनाथ का टीला' कहाँ था? - पंजाब में नमक के पहाड़ों के बीच
11. आचार्य शुक्ल के अनुसार सिद्धों से अपनी परंपरा अलग किस नाथ ने किया? - जलंधरनाथ
12. प्रमुख नाथ कवि- गोरखनाथ, चौरंगी, गोपीचंद, चुणकरनाथ, भरथरी जलन्ध्री पाव।
13. कनफटे योगी किस पंथ के लोगों को कहा है? -नाथ पंथ
14. आचार्य शुक्ल ने सिद्ध सरहपा का समय माना? - विक्रमी संवत ६९०
15. 'नौ लख पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा ऐसे मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा। - पंक्तियाँ किसकी हैं? - गोरखनाथ

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
अविशेष	साधारण, सामान्य
असित	काला, अश्वेत
अशित	खाया हुआ
अवलंब	सहारा
अवदान	प्रशंसित कार्य
अवधान	ध्यान, मनोयोग
अवरोध	रुकावट
अविरोध	बिना विरोध के
अवधि	समय सीमा

योग साधना एक संपूर्ण जीवनशैली है इसलिए अपनी दिनचर्या में शामिल करे : डा विवेक कुमार सैनी

राजकीय महाविद्यालय हिसार में 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस धूमधाम से बनाया गया

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार, । राजकीय महाविद्यालय, हिसार में 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस थीम एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। । यह आयोजन हरियाणा योग आयोग एवं उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा के दिशा-निर्देशों के तहत संपन्न हुआ। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ विवेक कुमार सैनी ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि योग साधना एक संपूर्ण जीवनशैली है इसलिए अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। उन्होंने कहा कि योग की बदौलत हो भारत विश्व गुरु कहलाता था एक बार फिर माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रयासों से भारतीय योग की महता को पहचानते हुए हर साल 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। महाविद्यालय परिसर में शारीरिक शिक्षा विभागाध्यक्ष डॉ सुखबीर दुहन के नेतृत्व में योग शिक्षक श्री मोहित ने योग प्रोटोकॉल का विधिवत अभ्यास करवाया।

उन्होंने मंच संचालन करते हुए कहा कि योग न केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य का साधन है, बल्कि यह सामाजिक और वैश्विक समरसता का प्रतीक भी है। हमें योग को केवल एक दिन का आयोजन न मानकर, जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। उन्होंने बताया कि महाविद्यालय के एन एस एस और एन सी सी के 100 कैडेट जिला स्तरीय योग शिविर में भाग लेने महावीर स्टेडियम में पहुंचे वहीं महाविद्यालय परिसर में आयोजित योग शिविर में शारीरिक शिक्षा विभाग , एन एस एस तथा एन सी सी के सैकड़ों छात्र-छात्राओं व समस्त प्राध्यापकगण ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। न केवल योगाभ्यास किया, बल्कि इसे अपनी दैनिक जीवनशैली में अपनाने का संकल्प भी लिया।

इस अवसर पर , प्रो राजेंद्र सेवदा, प्रोग्राम अधिकारी शमशेर सिंह , राजेंद्र प्रसाद, सरोज कुमारी , कैप्टन स्नेहलता , फ्लाइंग ऑफिस गोविल जिंदल , समेत समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Emigrant = उत्प्रवासी

Emoluments = परिलब्धियाँ

Employee = कर्मचारी

Employment Exchange = कार्यालय रोज़गार

Enact = अधिनियमित करना

Encashment = भुनाना/तुड़ाना

Encroachment = अधिक्रमण/अतिक्रमण

Endorse = पृष्ठांकन करना/समर्थन करना

Endowment = अक्षय निधि/बंदोबस्ती

Enforce = प्रवर्तन करना

Engagement = आबंध/वचनबंध/कार्य संलग्नता

Enhance Punishment = वर्धित-दंड

Enrolment = नामांकन

Ensuing = आगामी

Entitled = हक़दार

Entrust = सौंपना

Equipment = उपस्कर

Equivalent = तुल्य/तुल्यांक

Errata = अशुद्धि पत्र

Establishment = स्थापना/कर्मचारी वर्ग

Evaluation = मूल्यांकन

Evidence साक्ष्य/गवाही

Except as otherwise provided = अन्यथा

प्रावहित को छोड़कर

Except where otherwise stated = यदि

अन्यथा न कहा गया हो

Excess = अति/अधिकता/आधिम्य

Exchange = विनिमय/केंद्र

Exchequer = राजकोष

Exclusive = अनन्य/रहित

Execute = निष्पादन

योग की प्रासंगिकता

योग शब्द का अर्थ 'एक्य' या 'एकत्व' होता है जो संस्कृत धातु 'युज' से निर्मित है। युज का अर्थ होता है 'जोड़ना'। गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है ''योग : कर्मसु कौशलम्'' अर्थात् योग से कर्मों में कुश्लाता आती है। व्यावाहरिक स्तर पर योग शरीर, मन और भावनाओं में संतुलन और सामंजस्य स्थापित करने का एक साधन है। योग भारतीय ज्ञान की हजारों वर्ष पुरानी शैली है। हजारों मूर्तियाँ इसके संबंध में योग की स्थिति में अभी तक प्रमाणिक रूप में है। भगवत गीता में अनेकों बार योग शब्द का उल्लेख किया गया है। योग के साक्ष्य सिंधु घाटी, वैदित सभ्यता तथा बौद्ध एवं जैन दर्शन में किसी-न-किसी रूप में प्राप्त हुआ है। योग के प्रसिद्ध ग्रंथों में पतंजलि द्वारा रचित योगसूत्र एवं वेदव्यास द्वारा रचित योगभाण्य का विशेष महत्त्व है। नागेश भट्ट द्वारा रचित योग सूत्रवृत्ति भी विख्यात है। योग के आठ अंगों को अष्टांग कहते हैं जिससे आठों आयामों का अभ्यास एक साथ किया जाता है। यम, नियम, आसन, प्रणायाम, धारणा, ध्यान, प्रात्याहार, समाधि को योग के आठ अंग माना जाता है। योग में प्राणायाम का विशेष महत्त्व है। प्राण का अर्थ जीवन शक्ति एवं आयाम का अर्थ ऊर्जा पर नियंत्रण होता है। अर्थात् श्वास लेने संबंधी कुछ विशेष तकनीकों द्वारा जब प्राण पर नियंत्रण किया जाता है तो उसे प्राणायाम कहते हैं। प्राणायाम के तीन मुख्य प्रकार होते हैं- अनुलोम-विलोम, कपालभाति प्राणायाम और भ्रामरी प्राणायाम। भारतीय धर्म और दर्शन में योग का अत्यधिक महत्त्व है। आध्यात्मिक उन्नति या शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिये योग की आवश्यकता एवं महत्त्व को प्राय: सभी दर्शनों एवं भारतीय धार्मिक संप्रदायों द्वारा एकमत से स्वीकार किया गया है। जैन और बौद्ध दर्शनों में भी योग के महत्त्व को स्वीकृति प्राप्त है। वर्तमान समय अर्थात् आधुनिक युग में योग के महत्त्व में और अधिक अभिवृद्धि हुई है। मनुष्यों में बढ़ती व्यस्तता एवं मन की व्याकुलता इसके प्रमुख कारणों में से हैं। आधुनिक मनुष्य को आज योग की अत्यधिक आवश्यकता हो गई है। मन और शरीर अत्यधिक तनाव, प्रदूषण एवं भागदौड़ भरी जिंदगी के कारण रोगग्रस्त होते जा रहे हैं। व्यक्ति के अंतर्मुखी और बहिर्मुखी स्थिति में असंतुलन आ गया है। भारत के प्रधानमंत्री मोदी जी के अनुसार, योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है; मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है; विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करने वाला है तथा स्वास्थ्य और भलाई के लिये एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करने वाला है। यह व्यायाम के बारे में नहीं है लेकिन अपने भीतर एकता की भावना, दुनिया और प्रकृति की खोज के विषय में है। हमारी बदलती जीवनशैली में यह चेतना बनकर हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में मदद कर सकता है।

कई बड़े योगियों और गुरुओं द्वारा योग को परिभाषित किया गया है। श्री श्री रविशंकर के अनुसार ‘‘योग सिर्फ व्यायाम और आसन ही है। यह भावनात्मक एकीकरण और रहस्यवादी तत्त्व का स्पर्श लिये हुए एक आध्यात्मिक ऊँचाई है, जो आपको सभी कल्पनाओं से परे की एक झलक देता है। ओशो के अनुसार ‘‘योग को धर्म, आस्था और अंधविश्वास के दायरे में बाधना गलत है। योग विज्ञान है, जो जीवन जीने की कला है। साथ ही यह पूर्ण चिकित्सा पद्धति है। जहाँ धर्म हमें खूंटे से बाँधता है, वहीं योग सभी तरह के बंधनों से मुक्ति का मार्ग है।’’ बाबा रामदेव के अनुसार ‘‘मन को भटकने न देना और एक जगह स्थिर रखना ही योग है।’’ आज योग का ज्ञान जिस सुव्यविस्थत तरीके से हमें उपलब्ध है उसका श्रेय महर्षि पतंजलि को जाता है। पहले योग के सूत्र बिखरे थे जिन्हें समझना मुश्किल था। महर्षि पतंजलि ने इन्हें समझते हुए इन्हें सुव्यवस्थित किया और अष्टांग योग का प्रतिपादन किया। भारत के षट् दर्शनों में महर्षि पतंजलि का योग दर्शन बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। योग शब्द की परिभाषा महर्षि पतंजलि ने अपने योग सूत्र में ‘‘योगश्रितवृत्ति निरोध:’’ के रूप में दी जिसका अर्थ होता है चित्त की वृत्तियों के निरोध को योग कहते हैं। चित्त की इन वृत्तियों के निरोध हेतु अभ्यास एवं वैराग्य को आवश्यक बताया जाता है- ‘‘अभ्यास वैराग्याम्यां तन्निरोध:’’ और चित्त की वृत्तियों के निरोध से होने वाली उपलब्धि को ‘‘तदा द्रष्ट: स्वरूपऽवस्थानम्’’ माना गया है अर्थात् इस समय द्रष्टा की अपने स्वरूप में स्थिति हो जाती है। इस अवस्था की प्राप्ति के लिये जो साधन बताए गए हैं, वे ही अष्टांग योग कहलाते हैं। देखा जाए तो योग कोई धर्म नहीं है, यह जीने की एक कला है, जिसका लक्ष्य है- स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन। योग के अभ्यास से व्यक्ति को मन, शरीर और आत्मा को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। यह भौतिक और मानसिक संतुलन द्वारा शांत मन और संतुलित शरीर की प्राप्ति कराता है। तनाव और चिंता का प्रबंधन करता है। यह शरीर में लचीलापन, मांसपेशियों को मजबूत करने और शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ाने में मदद करता है। इसके द्वारा श्वसन, ऊर्जा और जीवन शक्ति में सुधार होता है। इससे प्रतिरक्षा तंत्र में सुधार और स्वस्थ्य जीवन शैली बनाए रखने में मदद मिलती है। 2014 में भारत के प्रधानमंत्री मोदी ने संयुक्त राष्ट्र को 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का सुझाव दिया था क्योंकि गर्मियों में सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित होता है एवं उत्तरी गोलार्द्ध में 21 जून वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है। सर्वप्रथम अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन 21 जून, 2015 को किया गया था जिसने विश्व भर में कई कीर्तिमान स्थापित किये। वर्तमान में योग भारत ही नहीं पूरे विश्व के लिये प्रासांगिक विषय बना हुआ है। भारत के अलावा कई इस्लामिक देशों ने भी इसे अपनाया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि योग के महत्त्व को देखते हुए आज पूरा विश्व इसे पूरे मनोयोग से अपना रहा है। योग विद्या को वेदों में विशेष स्थान प्राप्त था। वेदों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय आध्यात्मिक उन्नति करना है। इसके लिये यज, उपासना, पूजा व अन्य कार्यक्रमों का वर्णन किया गया है। इन सबसे पूर्व योग साधना का विधान किया गया है। इसके संदर्भ में ऋग्वेद में कहा याग है-

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञोविपश्चितश्रन।
स धीनां योगमिन्वति।।

योग के पूर्ण नहीं होता है। इस बात से पता चलता है कि वेदों में योग को कितना महत्त्व दिया गया है।

विष्णु पुराण में भी कहा गया है कि ‘‘जीवात्मा तथा परमात्मा का पूर्णतया मिलन ही योग है।’’ योग के इसी महत्त्व को देखते हुए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा योग की बढ़ती स्वीकारोक्ति एवं पश्चात् को देखते हुए कहा जा सकता है कि इस तरह की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत लोगों तथा समाजों एवं संस्कृतियों के मध्य सांस्कृतिक एवं सभ्यागत वार्ता बनाए रखने में मदद करती है और इस स्वीकृति से पूरे विश्व को लाभ पहुँचता है।

राहुल

पुस्तक समीक्षा

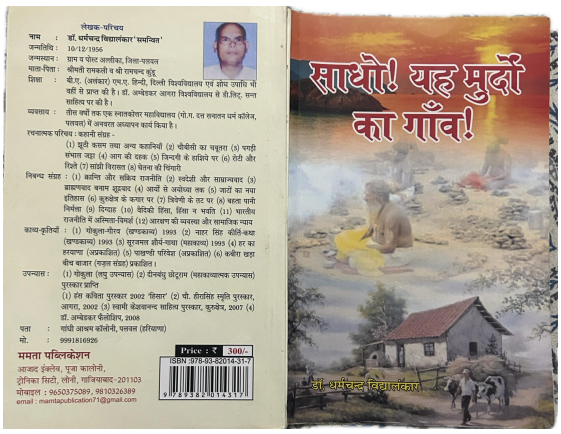

लेखक: धर्मचन्द विद्यालंकार
पुस्तक: “साधो यह मुर्दों का गाँव”
📖 मूल्य: HB 500/-, PB 300/-
ममता पब्लिकेशन
आजाद इन्कलेव, पूजा कॉलोनी ट्रोनिका सिटी,
लोनी, गाजियाबाद-201103

डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार की निबंध संग्रह 'साधो यह मुर्दों का गाँव' एक विचारोत्तेजक और युगधर्मी रचना है, जो मध्यम वर्ग की चेतना को झकझोरने का साहसिक प्रयास करती है। संग्रह का प्रथम निबंध ही पाठक को वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य के यथार्थ से साक्षात्कार कराता है, जहाँ वर्चस्ववादी शक्तियाँ लोकतंत्र, संस्कृति और अर्थव्यवस्था को एकाधिकारवादी ढाँचे में ढालने का प्रयास कर रही हैं। लेखक ने भारत की बहुलतावादी संस्कृति के खिलाफ "एकायामी" राष्ट्रवाद के नाम पर चल रहे प्रहारों की पहचान करते हुए उनका प्रबल प्रतिकार किया है। इस संग्रह में धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक विषयों पर लिखे गए निबंध शामिल हैं। जहाँ 'आम के आम और गुठलियों के दाम' जैसे निबंध व्यंग्य और सामयिक टिप्पणी का सुंदर मिश्रण हैं, वहीं 'भारतीय अर्थ-व्यवस्था और नव उदारवाद' जैसे आलेख शोधपरक दृष्टि से लैस हैं।

ऐतिहासिक निबंधों में तथ्यात्मक प्रामाणिकता और भाषा-विज्ञान से जुड़े विषयों में गंभीर विचारशीलता दिखाई देती है।
विद्यालंकार की भाषा सहज होते हुए भी विषयानुरूप जटिल हो जाती है। कहीं-कहीं विचारों का बोझिलपन शैली को दुरूह बना देता है, परंतु यह उनके गहन अध्ययन और विश्लेषण की कीमत है। उदाहरण के लिए, 'जातियों के निर्माण के आधार स्तम्भ' जैसे निबंधों में सैद्धांतिक गहराई के कारण भाषा अकादमिक हो गई है, जबकि 'चाह गई चिन्ता मिही...' जैसे निबंध लोकप्रिय शैली में लिखे गए हैं।
यह पुस्तक वर्तमान समय में धर्म, राजनीति और संस्कृति के बीच उभरते तनावों को समझने का एक सशक्त माध्यम है। विशेष रूप से, 'भारतीय या हिन्दू गाथा-शास्त्र के यक्ष प्रश्न?' और 'धर्मराष्ट्रवाद' पर केन्द्रित निबंध पाठकों को इतिहास और वर्तमान के बीच तार्किक कड़ी जोड़ने में सहायक हैं।
डॉ. विद्यालंकार का यह संग्रह न केवल हिंदी निबंध साहित्य की समृद्धि है, बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज़ भी है जो पाठकों को विचार और क्रिया के लिए प्रेरित करता है। हालाँकि, कुछ निबंधों में भाषाई जटिलता सामान्य पाठक के लिए चुनौती पैदा कर सकती है, फिर भी यह पुस्तक बौद्धिक वर्ग, शोधार्थियों और सामाजिक चिंतकों के लिए अनिवार्य पठन का दावा करती।

डॉ राजपाल
हिंदी विभाग
गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार